प्रतियोगिता - माँ की पाती बेटी के नाम

दि. १०.८.२०१८

प्रति,
सीमा माहेश्वरी
पार्वती सदन छात्रावास
पुने।

मेरी प्यारी बिटिया,

मुझे पूरा विश्वास है कि तुम सकुशल होगी और खूब मन लगा कर पढ़ाई कर रही होगी।

तुम पूने चली गई तबसे तुम्हारी याद तो बहुत आती है पर तुम्हे तुम्हारी मंज़िल के ओर बढ़ता देख मन खुशी से भर उठता है।

मैं जानती हूं तुम ये पत्र पाकर हसोगी और तुरंत मोबाइल पर कॉल कर पूछोगी माँ इस ज़माने में पत्र। खैर मुझे भरोसा है, इस पत्र की गहराई भी तुम किसी दिन समझ जाओगी। अभी तो मुझे तुमसे कुछ और ज़रूरी बातें करनी है।

जानती हो जब हमने तुम्हे दूर बाहर पढ़ने भेजने का निर्णय लिया तो बहुत खयाल आए और कई लोगो ने डराना भी चाहा। लड़की ने अभी अभी युवावस्था में कदम रखा है, नया शहर, नया माहौल, वो नाज़ुक उम्र जब बच्चे अधिकतर अपनी राह से भटक जाते है। उसपर गतिविधियों पर ध्यान रखने परिवार नहीं।

तुम्हें बताने में बहुत खुशी हो रही है के हम एक पल भी डगमगाए नहीं। क्यूंकि हमें भरोसा है अपनी बिटिया पर। तुम्हारी काबिलियत, सूझ-बूझ और सभ्यता पर। फिर भी माँ हूं ना। अपने जीवन के अनोभवो से अपने मन की कुछ बाते तुमसे कर रही हूं। ज़िन्दगी में फैसले लेने मदद करेगी।

तुमने एक नई और सुंदर ज़िन्दगी में कदम रखा है। आने वाले कुछ साल तुम्हारे व्यक्तित्व को उभारने में महत्वूर्ण साबित होंगे। इस जीवन को पुर्णपन से जीना। खूब मज़े करना, नए नए अनुभव लेना।

ये नई ज़िन्दगी तुम्हारे जीवन में बहुत से नए लोग लेकर आएगी। इनमें से कुछ तुमसे ऐसे जुड़ जाएंगे के वो आजीवन तुम्हारा अहम हिस्सा बनके रहेंगे, इस परिवार से बाहर एक परिवार। ऐसे मित्रो को सदा संजोकर रखना। उनके हर अच्छे बुरे वक्त का साथी रहना। किसी की मदद करने में अपना मतलब ना ढूंढ़ना। इस से तुम्हे सिर्फ अच्छे और सच्चे मित्र नहीं मिलेंगे बल्कि मिलेगा तुम्हे अवसर एक अच्छा इंसान बनने का।

हां, ये भी हो सकता है कि इस सफर में तुम्हारा सामना गलत राह पर ले जाने वालो से हो जाए। ये भी हो सकता है कि वक़्त के बहाव में तुम कुछ ऐसा करलो जो बाद में तुम्हे सही ना लगे। पर बेटा याद रखना वहीं इंसान कुछ नया सीखता है जो गलती करता है। जिसने गलती ना कि उसने ज़िन्दगी में कुछ नया किया ही नहीं। पर साथ ही ये भी ध्यान रहे के आगे वो ही इंसान बढ़ता है जो अपनी गलतियों को समझे, सुधारे और उनसे सीखे।

बिटिया, ज़िन्दगी में ऐसे कई मोड़ आएंगे जब सही गलत फैसले लेने में उलझन होगी। उस वक़्त अपने अंतर्मन से पूछना के क्या करके मैं अपने आप से संतुष्ट रहूंगी। क्या करने पर मुझे कभी अपनोंसे नज़रे मिलाने में हिचकिचाहट नहीं होगी। बस सही राह का चुनाव आसानी से हो जाएगा।

और एक अहम बात, ज़िन्दगी में चाहे किसी भी मोड़ पर हो, तकलीफ चाहे छोटी हो मोटी, कोई दुविधा या कोई भी प्रश्न, जब भी ज़रूरी लगे, अपने परिवार को सदा साथ पाओगी। याद रखना इनसे बेहतर तुम्हें कोई समझ नहीं सकता और ये जीवन में हमेशा तुम्हारा भला ही चाहेंगे। वक़्त आने पर कभी कोई तुम्हारा मित्र तो कोई गुरु, बनते रहेंगे। ये सदैव तुम्हारे साथ है।

जिस तरह तुमने आज तक अपने लिए सही निर्णय का चुनाव कर अपनी पहचान बनाई है बस उसी तरह आगे बढ़ती रहना, तरक्की करते रहना।

अंत में बस इतना कहूंगी,

खूब मन लगा के पढ़ना,
ज़िन्दगी की ऊंचाइयों को पाना,
इस तेज रफ्तार जीवन में पर,
ज़िन्दगी जीना भूल ना जाना।

जल्दी ही तुमसे मिलने की आशा करती।

तुम्हारी मम्मी,
अंतरा

नाम - पूनम अर्पित सोमानी
उम्र: २९ साल
शहर - अहमदाबाद
प्रदेश - गुजरात
फोन नंबर – 8805504900
सखि संगठन